गयी रुतों के साथी

फ़ारूक़ नाज़की

गयी रुतों के साथी

फ़ारूक़ नाज़की

सम्पादन-संकलन

सतीश विमल
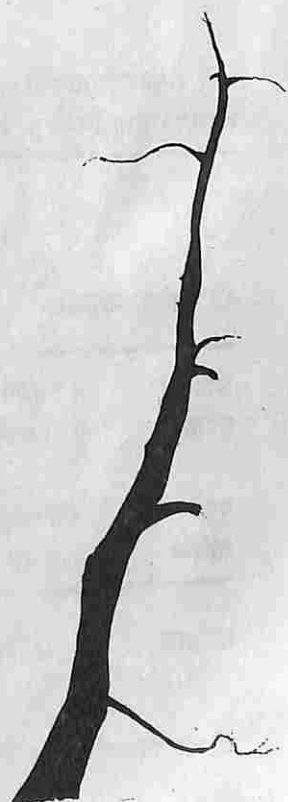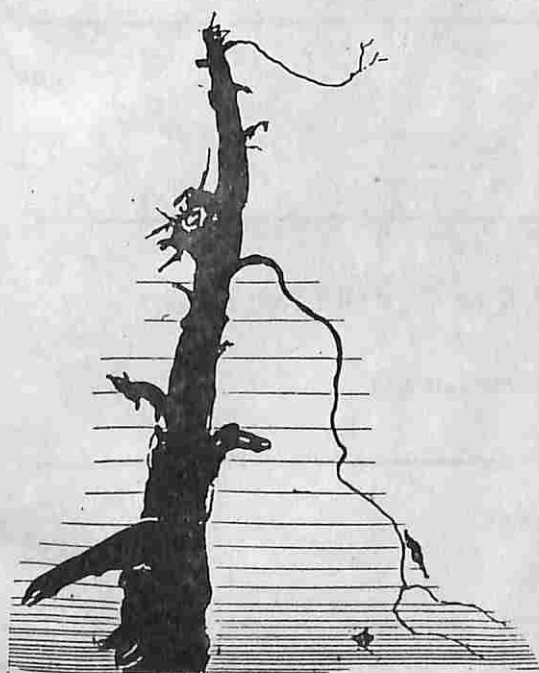
गयी रुतों के साथी
(चुनी हुई उर्दू कविताएं)

कवि : फ़ारुक़ नाज़की
सम्पर्क : दूरदर्शन केन्द्र, श्रीनगर : 190001

संस्करण : 1994
मुद्रक : दी लक्ष्मी प्रेस, 8 नेता जी सुभाष मार्ग, दिल्ली-110 002

मूल्य : पेपरबेक संस्करण पचास रुपये
सजिल्द : अस्सी रुपये

प्रकाशक : ताबिष पब्लिकेशन

सोम नाथ साधू
तेरे नाम
जानता है
तेरी माँ कमली
मुझ से डर कर
कश्मीर से भाग गई है
और चांदी की वह थाली भी
अपने साथ ले गई है
जिसमें वह हम दोनों के लिए
खाना परोसती थी

तुम्हारा 'फ़ारूक़'

बन्सी निर्दोष
हृदय कौल भारती

और उन बहुत सारे मित्रों के नाम
जिनके मकानों के द्वार जल गए हैं
पर रात के अंधेरे में

बेनाम हाथों की दस्तकें सुनाई देती हैं

यारों ने बहुत दूर बसाई हैं बस्तियां

गयी रुतों के साथी

तमाम भारतीय भाषाओं का साहित्य हालात की दहशत की जिस हूक को शब्द दे रहा है, उसी का एक चटकीला आईना है 'गयी रुतों के साथी।' आज हर इन्सान हैरान है कि व्यक्तिगत रूप से सही सोच रखने के बावजूद जो घट रहा है वह क्यों, और कौन है उसका नायक ? और यह भी कि हम खुद कितने शरीके जुर्म है? फ़ारूक नाज़की अपनी ग़ज़लों, रुबाइयों, नज्मों, अशआर और कविताओं में इन्हीं सवालों की पर्तें खोल रहे हैं । आज का साहित्यकार जिस मर्म की बात करता है वह भावुकता से परे का, प्रश्नकर्ता मर्म है । समाजशास्त्री जिस तथ्य को सामने रखता है, कवि उसे अंदरूनी सच्चाई की तरह झेलता ओर प्रेषित करता है । उसमें पूरे वजूद की समग्रता होती है और इसीलिए इस साहित्य के दर्पण में हमें चित्र के एक कोने या हिस्से की डिटेल भर न मिल कर आदमक़द छवि नजर आती है। फ़ारूक नाज़की की शायरी में इस आदमी के पैरों तले देश की जमीन है, सर पर अपने हिस्से का आसमान और चारों तरफ कभी हरे होते, कभी झुलसते पेड़ दरया, मकान, झोपड़े, पर्वत, सड़कें और पगडंडियां ।

प्रस्तुत संग्रह कश्मीर का धड़कता, सुलगता, आवाज बुलन्द करता दस्तावेज है । इसकी रचनाओं को पढ़ना कम अज कम ज्यादातर रचनाओं से गुज़रना, एक हिला देने वाला अनुभव है । कथ्य और संरचना यों गुंथे हुए हैं कि कुछ भी सायास नहीं लगता । फिर भी प्रतिध्वनियां उठती हैं । पढ़ने वाला सोचते चले जाने पर मजबूर हो जाता है :

आप की तस्वीर थी अखबार में
क्या सबब है आप घर जाते नहीं

कश्यप ऋषि की नगरी को असीसता, जंगलों की बात कहता, याद दिहानी कराता कवि उम्मीदवर भी हो जाता है ।

इतनी खराब सूरत ए हालात भी नहीं
जो कह न पाऊँ ऐसी कोई बात भी नहीं

सूरज का गांव जिसकी जटाओं में था असीर
ऐ शहरे बेचिराग यह वह रात भी नहीं ।

खुले दृश्य, दिल का हाल, गहरी उदासी और परेशान झुंझलाहट में उभरती आशा की किरण के बावजूद यह शायरी मूलतः, सारतः एक पुकार है –

मशवरा देने की कोशिश तो करो
मेरे हक में कोई साजिश तो करो ।

सतीश विमल द्वारा देवनागरी लिप्यांतर में प्रस्तुत उर्दू शायदी का 'गयी रुतों के साथी' हर पढ़ने वाले, सोचने वाले का साथी बनेगा और रुतों की वापसी की साजिश में शरीक होने की दावत देगा मेरा यह विश्वास है । फारूक नाज़की, साधुवाद ।

इन्दु जैन

20.8.94
ए–1 प्रवक्ता निवास,
इन्द्रप्रस्थ कालेज, दिल्ली

शाम का सूना नगर आबाद होगा

जनाब फ़ारूक नाज़की की कविताएं अमीर खुसरो, रहीम और जायसी की परम्परा की कविताएं हैं । इनकी कविताओं में रवानगी है, दर्द है, आम फहम की चिन्ता है । रस से भरी यह कविताएं मन को कहीं न कहीं छू लेती हैं । कवि का दर्द अपना दर्द महसूस होता है, जब वह कहता है – यारों ने बहुत दूर बसाई हैं बस्तियां । वह बेनाम हाथों की दस्तक सुनता है और अपने यारों के बिछुड़ने का दर्द उसे बेतरह परेशान करता है । कवि प्रेम का दीवाना है, जिसे काम पवन का पागल झोंका छूता है, सताता है, दीवाना बनाता है । पर यथार्थ चित्रण कवि की मूल संवेदना है, उसकी आत्मा है । वह प्रेम या प्रकृति का चित्रण करते वक्त भी कश्मीर के विरह को भूल नहीं पाता । पर उसे विश्वास है कि यह भेद नीति बहुत दिन चलने वाली नहीं । कभी न कभी चिड़िया चहकेगी क्योंकि गरूड़ की ललकार की उन्हें परवाह नहीं । वे तो प्रेम के उपासक हैं । उसे चिंता है अपने उजड़े शहर की, पर शाम का सूना नगर आबाद होगा – यह उसका विश्वास है ।

डा. सत्यकाम
हिन्दी विभाग, इन्दिरा गांधी
राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
(सह सम्पादक : समीक्षा)

नयी दिल्ली
19.08. 1994

दो शब्द

हिन्दी और उर्दू एक ही भाषा की दो शैलियां हैं । जब उर्दू ग़ज़ल जैसी लोकप्रिय विद्या का हिंदी में लिप्यांतरण किया जाता है तो उसका हिंदी जगत में स्वागत होना एक सीधी सी बात है फ़ारूक़ नाज़की की उर्दू कविताओं को हिन्दी में लिप्यांतरित करके एक प्रशंसनीय कार्य किया गया है । संग्रह में ग़ज़लों के अतिरिक्त नज़में भी सम्मिलित हैं । भाव, संवेदना एवं प्रस्तुतिकरण की दृष्टि से ये रचनायें आधुनिक हैं ।

डा. सोमनाथ कौल
हिन्दी विभाग
कश्मीर विश्वविद्यालय

जम्मू
17.8.94

चाँद मिट्टी के दरमियाँ

(छठे दलाई लामा के विचार)

नये नवेले फूलों पर इक कोहरा है
शीतल शीतल पवन का चौमुख पहरा है
रुत फागुन की देख के तितली काँप उठी
फुलवारी में सर्दी का अब ढ़ेरा है

❑

मधुमक्खी की गूंज न अब मलहार कोई
मेघ गगन में जैसे सूत्रधार कोई
धरती से चुपचाप कहे : ऐ धरती माँ
तेरे फूल उठा लाया इस पार कोई

आज खिले फूलों की चमचम आज ही आज
कल मुर्झायें रंग मिटे और बास न हो
जैसे युवक काल के दर पर सीस झुकाये
सीधा अक्षर झुग जाए अहसास न हो

□

मेरा मन बस तेरी सोच में नाचे है
मेरा दर्पण तेरी सूरत मांगे है
तुझ से कट कर जग से मैं कट जाता हूं
मेरे भीतर कोई आकर झांके है

□

दर : द्वार
सीस : शीश

उस काया की खुशबू भीनी भीनी है
दूर गगन से उतरी मन में शान्त हुई
मुझको छोड़ कर जब उसने वनवास लिया
ऊँचे पेड़ों और फूलों के साथ हुई

❑

फूल खिलें, मुर्झाकर बिखरें चारों ओर
रोना धोना तितली का स्वभाव नहीं
हम दोनों की दूरी तय है जानेमन
दूरी एक निशानी होगी, घाव नहीं

❑

नींद पराये देश गई है, नयन खुले
जान मेरी परदेस गई है, नयन खुले
चूर थकन से जाग रहा मैं सारी रात
भोर पिया चौदस भई है, नयन खुले

❐

हंस के मन को दरिया ऐसा भाये है
सांझ सवेरे पानी पर लहराये है
माघ–शिशुर में पानी जब जम जाये है
हंस उड़े चुपचाप, नहीं शरमाये है

❐

काठ का घोड़ा क्या जाने दुख–सुख की बात
फिर भी आंखों आंखों से इक बात कहे
लेकिन मैं जिस नार की धुन में पागल हूँ
निर्दयी ऐसी मिलकर भी कब साथ रहे

❑

वर्षा की बूंदे गिर कर बह जाती हैं
सोचों की चट्टानें भी ढह जाती हैं
प्यार के अक्षर लिखते ही मिट जाते हैं
आशायें आशायें ही रह जाती हैं

❑

पत्थर, घात या कागज पर जो खिंचा हो
अक्षर, गीत, छवि, किसी का साया हो
मिटने को तो हर वस्तु मिट जाती है
अमर वही जो अक्षर दिल पर लिखा हो

❒

मैं भौंरा नरगिस का प्रेम जगाता हूं
नरगिस मेरा गीत, इसी को गाता है
नरगगिस को पतझड़ की भेंट चढ़ाती हो
रुक जा बैरी आंधी मैं भी आता हूं

❒

मन में मेरी आन बसी हो नार सजल
उसके बस में बस्ती, पर्वत, जल और थल
उसकी आशा मेरी जीवन–धारा है
हर मौसम में मुझ पर बरसे ज्यूं बादल

❐

सूफी और संतों की बातें अच्छी हैं
मेरे मन को उनकी बातें जचती हैं
लेकिन ध्यान तुम्हारी ओर लगा है यूँ
तेरी बात बिना सब बातें खलती हैं

❐

हर पल ध्यान गुरू का मुझको रहता है
फिर भी उसका मुख मुझसे क्यों छिपता है
मैं जिस सुन्दर नार सजल पर लोट हुआ
पलछिन मन में उसका चेहरा खिलता है

❐

तुझपर हमने जितना ध्यान दिया गोरी
अपने मन पर इतना ध्यान अगर देते
आने–जाने के बंधन से छुट जाते
तेरी प्रीत का हम बलिदान अगर देते

❐

सूरज अब मेरी किस्मत का चमका था
पूजा के झण्डे चौमुख लहराते थे
फूल सी कोमल नार अतिथि मेरी थी
नाग मचलते ज्यूंही हम बल खाते थे

❑

भीड़ बहुत थी उसने घूँघट खोल दिया
रस अपनी मुस्कान का जग में घोल दिया
लेकिन उस ने अंखडियों से शरमा कर
सारी भीड़ पे मुझको भारी तोल दिया

❑

मैंने पूछा क्या मेरी हो जाओगी
बोली : इस युग मैं तो हूं मैं साथ तेरे
पानी, वायु, आग न बंधन तोड़ सके
मृत्यु जब आए तो चल दूं साथ तेरे

❒

प्रेम प्यार का बंधन तोड़ के जाना है
प्रीत नगर की गलियां छोड़ के जाना है
व्याकुल मन को एक ही चिन्ता घेरे है
उस नारी से क्या मुँह मोड़ के जाना है

❒

यह तेरी मुस्कान की चांदी कैसी है
मन आंगन पर वर्षा बन कर बरसी है
तूने मुझसे प्यार किया है सच कहदे
तेरी अच्छा जानाँ ! मेरी जैसी है

□

मैं हूं एक शिकारी जिसने ज़ंगल में
यत्रुक* नामक एक परी को पकड़ा था
नोर्ज़ुन्ग् ग्यालू*, जो जंगल का राजा था
मुझसे छीन के इस आफत को भागा था

□

*लामा यत्रुक – नुर्जुन्ग : एक लद्दाखी कमानी कहानी के मुख्य पात्र

दीन–धर्म की शिक्षा मुझको भाये है
गुरू के आगे मस्तक भी झुक जाये है
हृदय मेरा ऐसा चंचल, चोरी से
ज्ञान ध्यान तज, गोरी के घर जाये है

❑

काम पवन का पगाल झोंका, पल दो पल
मेघ गगन से जैसे बरसा, पल दो पल
काया क्या है, धरती का अनमोल स्वरूप
यौवन क्या है, झिलमिल तारा पल दो पल

❑

जिसको मन के सिहांसन पर रखा था
वह सपनों की रानी किसके साथ गयी
मुरली का स्वर फीका फीका लगता है
भीतर की वह वाणी किसके साथ गयी

❑

बिरहा में नयनों से यूं अश्रु बरसे
धीरज के पत्थर में गहरा छेद हुआ
दिन निकला तो सूरज पहन लिया मैंने
सांझ हुई मैं मधुशाला की ओर गया

❑

गोरी तू गोरी है या है मृगनयनी
रात मेरे पहलू में तू विश्राम करे
भोर भए तू रैन–बसेरा छोड़ मेरा
ऊँचे पर्वत, घने वनों की ओर चले

❐

चिड़िया 'भेद' की डाली पर चहकार करे
पेड़ की डाली झूम–झूम कर प्यार करे
दोनों इक दूजे में ऐसे खो– जायें
इनको भला क्या गरूड़ की ललकार करे

❐

जीवन के इस ऊँचे नीचे रस्ते में
खुशियों के जो पलछिन हम तुम साथ रहे
वह बीते तो मन ही मन में सोच लिया
अगले जन्म भी हाथ में तेरा हाथ रहे

❑

ग़ज़लें

उजालों के पुजारी गा रहे थे
हमारे घर जलाये जा रहे थे

बाहर आई थी गुलज़ारे वतन में
जनूँ के दिन हमें याद आ रहे थे

तक़्क़दुस लूट कर ख़लवतकदों का
हमारी जलवतों पर छा रहे थे

लुटे बाज़ार में असमत के मोती
हम अपने आप से शरमा रहे थे

ख़सो–ख़ाशाक की मानंद इंसान
वितस्ता में बहाये जा रहे थे

❐

गुलज़ारे वतन : अपने देश का उपवन ।
जनूँ : पागलपन, गुस्सा, दीवानगी। तक़्क़दुस : पतिव्रता, श्रेष्ठता ।
खलवतकदा : निर्जन स्थान । जलवत : समक्ष, दृष्टि ।
अस्मत : पवित्रता, सतीत्व, ब्रह्मचर्य । ख़सो ख़ाशाक : कूड़ा करकट। मानँद : तरह

शहर सारा ही करबला सा था
जो भी था खून ही का प्यासा था

अजनबी रात की स़्याही में
कोई तो मेरा आशना सा था

तेरे हिस्से में राहतें सारी
मेरे हिस्से में इक दिलासा था

मुझको हैरान कर गया 'फारूक'
वो जो इक शख्स देवता सा था

आशना : जान पहचान वाला, पराया पुरुष अथवा स्त्री जो एक दूसरे से ग़लत सम्बन्ध रखे।
करबला : नैनवा का ऐतिहासिक रण क्षेत्र जहाँ हजरत हुसैन पर मुसीबतें टूट पड़ी
दिलासा : सांत्वना ।

तू भी आजा साथ मेरे
सुधरेंगे हालात मेरे

टहनी टहनी तेरी है
कांटे, कलियां, पात मेरे

तू पगडंडी वादी की
शहर मेरे कस्बात मेरे

ला मोजू है, अल्ला हू
नफ़ी तेरी, इस्बात मेरे

मोहमिल बस्ती की रानी
सुन तीखे कलमात मेरे

मैं आवारा पंछी हूं
उड़ते बादल साथ मेरे

❑

वादी : घाटी । लॉ मोजू है : शून्य में ही सर्वस्व है ।
नफ़ी : नकार । इस्बात : सकार । मोहमिल : अर्थहीन
कलमात : बातें । कस्बात : नगरियाँ

नोके–खंजर रोज लिख लेती है इक दफ्तर नया
सुबह ले आती है अपने साथ फिर मंजर नया

देखते ही देखते बस्ती में लग जाती है आग
रोज़ लूट जाता है कोई मुस्कराता घर नया

संगबारी के लिए मौसम नहीं मखसूस अब
संगबारी ढूंढ लेती है हमेशा सर नया

रोशनी आये भी कैसे मेरे मातम-खाने में
जिसके बोसीदा दरीचों में लगा है दर नया

सूरत–ए–हालात के बारे में क्या लिखूं मियां
कोई मंजर 'नाज़की साहब' नहीं मंजर नया

❐

नोके खंजर : तलवार की नोक । मंज़र : दृष्य
संगबारी : पत्थरों की वर्षा । मख़सूस : निश्चित, विशेष ।
मातम–खाना : शोक कक्ष । बोसीदा : क्षेतिग्रस्त, गिरे हुए ।
सूरत ए हालात : हालात की स्थिति ।

चन्द लम्हों में ढह गया सब कुछ
पानी हो हो के बह गया सब कुछ

तेरी नगरी में खाली हाथ आए
रास्ते में ही रह गया सब कुछ

बाज़ आँखों का इक कलन्दर था
जो इशारों में कह गया सब कुछ

पहली बारिश से बर्फ मौसम तक
मैं अकेला ही सह गया सब कुछ

मैंने पूछा तेरी मता–ए–हयात
बोला जेहलम कि बह गया सब कुछ

❑

लम्हा : क्षण । बाज़ : गरूड़ । मताँ–ए–हयात : जीवन का अर्थ
जेहलम : वितस्ता

जूँही बामो दर जागे
बस्तियों में घर जागे

अंजुमो कमर जागे
आसमान पर जागे

आप ही के पहलू में
रात रात भर जागे

ऐसा ज़लज़ला आया
नींद से शज़र जागे

रत जगे से डरते है
नाज़की मगर जागे

बामो–दर : छत और द्वार । अंजुमो क़मर : तारक और चन्द्रमा ।
ज़लज़ला : भूकम्प । शजर : पेड़

नाम उसका जहां जहां लिखना
बेवफाई की दास्तां लिखना

उसके चलने का ज़िक्र जब आये
मौजे दरिया रवाँ रवाँ लिखना

चांद बस्ती में फूल सोने के
अब भी खिलते हैं मेहरबाँ लिखना

मैं हूं मुज़तर बदन की नगरी में
मेरे हिस्से में लामकाँ लिखना

रात में आग भी बरसती है
मेरे सर पर भी सायबाँ लिखना

मौजे दरिया : नदी की लहरें । मुज़तर : दुखी, पीड़ित
लामकाँ : आत्मलोक, दूसरी दुनिया, शून्य

इतनी खराब सूरत–ए–हालात भी नहीं
जो कह न पाऊँ ऐसी कोई बात भी नहीं

सूरज का गांव जिसकी जटाओं में था असीर
ऐ शहरे–बेचिराग़ यह वह रात भी नहीं

फिर आज उठ रहा है धुआँ दिल के आसपास
तजदीद ए आरिजु ए मुलाकात भी नहीं

डरता हूं अपने साये से मैं खुद गुज़ीदा हूं
सीने में कोई शोरिशे ज़ुलमात भी नहीं

फ़ारुक़ नाज़की ने खिलाये लहू के फूल
दिल पर अगरचे उसकी इनायात भी नहीं

सूरत ए हालात : हालात की स्थिति । शहरे बेचिराग : अंधेरा शहर। तजदीद ए आरिज ए मुलाकात : मिनल की इच्छा का पुनारम्भ । खुद गुज़ीदा : खुद का काटा हुआ । शोरिशे जुलमात : अंधकार की पीड़ा । लहू : रक्त

मैं इक गांव का शायर हूं
खुली फिज़ाओं का शायर हूं

धूप में खेतों पर लहराऊँ
नर्म हवाओं का शायर हूं

मेरे दम से हैं यह मौसम
धूप और छांव का शायर हूं

सहरा सहरा नाम है मेरा
मैं दरियाओं का शायर हूं

बहरों की बस्ती का गायक
नाबीनाओं का शायर हूं

नाबीना : ज्योतिहीन, अंधा

गहरी नीली शाम का मन्ज़र लिखना है
तेरी ही जुल्फों का दफ़्तर लिखना है

कई दिनों से बात नहीं की अपनों से
आज ज़रूरी ख़त अपने घर लिखना है

शिद्दत पर है हरे भरे पत्तों की प्यास
सहरा सहरा खून समन्दर लिखना है

पत्थर पर हम नाम किसी का लिखेंगे
आईने पर आज़र–आज़र लिखना है

चहरा रोशन, खुले हुए सहरा की धूप
गहरी आँखें, गहरा सागर लिखना है

इससे आगे कुछ लिखने से क़ासिर हूं
इसके आगे तुझको बढ़कर लिखना है

शिद्दत : पराकाष्ठा । सहरा : मरुस्थल ।
आज़र : हज़रत इबराहीम के चचा का नाम जो बुत–तराश थे ।
कासिर : असमर्थ, लाचार, मजबूर ।

अब कबूतर बाम पर आते नहीं
शोख़ पंछी पेड़ पर गाते नहीं

शहर सूना, रास्ते वीरान हैं
लोग अब आते नहीं, जाते नहीं

आप की तस्वीर थी अख़बार में
क्या सबब है आप घर जाते नहीं

नाज़की से शेअर कहना सीखिए
जो ग़ज़ल कहते हैं, छपवाते नहीं

बाम : छत । शोख : चंचल । सबब : कारण

यही इजजाम है दुनिया का हम पर
कि हम रखते नहीं काबू क़लम पर

न पूछो किसलिए बेरंग से हैं
नहीं होते हैं आमादा सितम पर

नवीद–ए–सुबह चेहरा गेसुओं में
ग़में दुनिया का साया चश्मे नम पर

हमारे हाल से हमदर्दियां क्यों
कहीं हरुफ आ न जाये मोहतरम पर

इल्जाम : आरोप । बेरंग : उदास, मलिन । आमादा : तैयार
नवीद ए सुबह : प्रातः के आगमन का सूचक । गेसू : लट
ग़मे दुनिया : दुनिया का ग़म । चश्मे–नम : गीली आंखें ।
हरुफ : चोट, आरोप, क्षति । मोहतरम : आदरनीय व्यक्ति

गुफ़्तगू में बहार की बातें
इश्क़ में कारोबार की बातें

हम को खुद पर भी एतबार नहीं
हम से क्या एतबार की बातें

दस्तरस से तुम्हारी बाहर हैं
कैफ़ की ओर खुमार की बातें

चांद, सूरज, जमीन किसके हैं
हासिलो मुस्तेआर की बातें

आगही के विशाल सागर में
गौहरे ताबदार की बातें

एतबार : भरोसा । दस्तरस : पहुंच । कैफ : मस्ती ।
खुमार : नशा । हासिलो मुसतेआर : उधार की प्राप्ति । आगही : चेतना ।
गौहरे ताबदार : चमकता हुआ हीरा

मैं छोड़ आया था अपने घर को, मगर उसी के ख्याल में हूं
नकूश ए पा ए हवा नहीं हूं, मैं अपने माज़ी के हाल में हूं

बुलन्दियों पर कयाम मेरा, हर एक बस्ती में नाम मेरा
मैं हर ज़माने की आबरू हूं, उरूज मैं हूं, जवाल मैं हूं

हिसार ए खौफ़ो हिरास में है, बुतान ए वहमो गुमाँ की बस्ती
मुझे खबर ही नहीं कि अब मैं जुनूब में या शुमाल में हूं

यहाँ से निकलूं तो जान लूंगा,मगर असीरी में जब तलक हूं
मुझे भी इज़न ए जवाब दे दे कि कैद अपने सवाल में हूं

यहाँ किसी को खबर नहीं है,किधर से आया किधर गया वह
उसी का चश्मे करम है मुझपर कि मस्त खुद अपने हाल में हूं

रंग खाके में नया भर दूंगा मैं
दुशमनों से दोस्ती करूंगा मैं

नकूश–पा : पग–चिन्ह । माज़ी : अतीत । हाल : वर्तमान
क़याम : स्थान, बसेरा । आबरू : लाज । अरूज : उत्थान ।
हिसार ए खौफो हिरास : भय और अस्थिरता की कैद
बुतान ए वहमो गुमाँ : संशय और भ्रम के बुत । असीरी : कैद, कारावास
इज़न ए जवाब : उत्तर की मुक्ति । चश्मे करम : कृपा दृष्टि । ज़वाल : पतन ।

फिर नहीं आने का ख्वाबों में तेरे
शहर से तेरे अगर जाऊंगा मैं

मैं बहुत जिद्दी हूं लेकिन जानेमन
तू बुलाये तो जरूर आऊंगा मैं

है तज़ादों का चमन मेरा वजूद
फस्ल ए गुल का मरसिया गाऊंगा मैं

कांच के अलफाज़ कागज़ पर न रख
संग ए मानी बन के टकराऊंगा मैं

रास्ते के वास्ते इक जाम दो
नीम शब है अब तो घर जाऊंगा मैं

तज़ाद : विरोधाभास । फ़स्ल ए गुल : फूलों की फ़स्ल ।
मरसिया : मरे हुए की प्रशंसा में लिखी गई कविता । अलफ़ाज़ : शब्द ।
संग ए मॉनी : अर्थ के पत्थर । नीम शब : अर्धरात्रि ।

गोश्त का नग़्मा गायेगा
खुद से जब शरमायेगा

मोती चुन लेगा सुख के
आंचल में चमकायेगा

जो बोयेंगे काटेंगे
जो खोयेगा पायेगा

मेन्ह बरसेगा जाड़े में
और मुसीबत लायेगा

मौज़ करेगा मन मौजी
जब पीकर लहरायेगा

सूरज, धरती, पवन, चकोर
हर कोई मुर्झायेगा

मिट्टी अज़मत लिखेगी
सागर गीत सुनायेगा

प्यारे दुलारे समझेंगे
जब कोई समझायेगा

अज़मत : महानता

ग़म की चादर ओढ़ कर सोये थे क्या
रात भर मेरे लिए रोये थे क्या

चादर ए अस़मत के धब्बे आप ने
रात पीकर सुबह ए दम धोये थे क्या

मैंने पूछा उनसे इक सादा सवाल
ख़ार मेरी राह में बोये थे क्या

ढूंढते फिरते हो खुद क़ो 'नाज़की'
इन्हीं गलियों में कभी खोये थे क्या

चादर ए असमत : सतीत्व अथवा ब्रह्मचर्य की चादर
सुबह ए दम : प्रातः के समय । ख़ार : कांटे

वहा पहाड़ों से उतर कर आयेंगे
राह भटके नौजवान घर आयेंगे

जिनकी खातिर हैं घरों के दर खुले
सुबह के बन कर पयमबर आयेंगे

फिर तलातुम खैज़ है दरिया ए नूर
हम तेरी तकदीर बन कर आयेंगे

दोस्तो ! मत सीखिए सच बोलना
सर पे हर जानिब से पत्थर आयेंगे

हाथियों की ज़द पे है काबा मेरा
कब अबाबीलों के लशकर आयेंगे

पयमबर : संदेशवाहक । तलातुम खैज़ : बाढ़ग्रस्त, क्षुब्द ।
दरिया ए नूर : प्रकाश की नदी । लशकर : सेना ।

जब भी तुमको सोचा है
सारा मन्ज़र बदला है

जाते जाते यह किसने
नाम पवन पर लिखा है

अंगारों के मौसम में
जिस्मों का मेला सा है

मेरी बस्ती में आकर
पागल दरिया ठहरा है

खुशियां है महमान मेरी
ग़म मेरा हमसाया है

तुम क्या जानो कश्मीरी
दिल्ली में क्या होता है

मन्जर : दृश्य ।

अजीब रंग सा चेहरों पे बेकसी का है
चलो संभल के यह आलम रवारवी का है

कभी न बात ज़माने ने दिल लगा के सुनी
यही तो खास सबब मेरी बेदिली का है

सुना है लोग वहाँ मुझसे खार खाते हैं
फसाना आम जहाँ मेरी बेबसी का है

खाखी : तेजी, भाग–दौड़ । खा़र : भय, ख़ौफ़ ।

मशवरा देने की कोशिश तो करो
मेरे हक में कोई साज़िश तो करो

जब किसी महफिल में मेरा ज़िक्र हो
चुप रहो इतनी नवाज़िश तो करो

मेरा कहना हरूफ ए आखिर भी नहीं
मेरी मानो आज़मायिश तो करो

खुद सताई शैवा ए इतलीस है
नजर ए हक, हरूफ ए सतायिश तो करो

चार–सू जुलमत के पहरेदार हैं
रहमतों की हम पे बारिश तो करो

नवाजिश : मेहरबानी । हरूफ ए आखिर : अंतिम शब्द ।
खुद सताई : अपनी प्रशंसा । शैवा ए इबलीस : शैतान का काम ।
नज़र ए हक : इनामी दृष्टि । हरूफ ए सतायिश : प्रशंसा के शब्द ।
चार सू : चारों ओर । जुलमत : अंधकार । रहमत : कृपा, करम ।

पीपल के पत्ते पर लिखा नाम तुम्हारा किसने बोलो
फूल रूतों तक पहुंचाया पैगाम तुम्हारा किसने बोलो

होंठों का अमृत पीते ही जाग उठे सब सोये सपने
ज़हर भरा पी डाला लेकिन जाम तुम्हारा किसने बोलो

स़हरा स़हरा किस ने बांटे रुशद ओ हिदायत के यह मोती
गुलशन गुलशन पहुंचाया इलहाम तुम्हारा किसने बोलो

आदम ओ हवा का किस्सा, ममनूआ टहनी का फल
अपने सर पर झेला है इलज़ाम तुम्हारा किसने बोलो

क्या मिला तुझको हमें बेसरों सामान करके
शहर ए गुलरेज को इस तरह बियाबान करके

पैगाम : संदेश । इलहाम : आत्मा की आवाज ।
रूशद ओ हिदायत : सच्चाई और सीख । ममनूआ : मनाही का ।

आरज़ू मौत की जो करता हूं
जिन्दगानी पे प्यार आता है
किस को छोडों किसे पसंद करूं
इसी उलझन में वक्त जाता है

सरसराहट है शाख़सारो में
घोंसला है कोई चिनारों में

दिल धड़कते है लालाज़ारो के
आग लगती है जब चिनारों में

आसमाँ आंख से हुआ ओझल
फिर परिंदे उड़े क़तारों में

बर्फ़ पिघली थी पेड़ जागे थे
अब के आया मज़ा बहारो में

हम भी सीने में दाग रखते हैं
हम भी शामिल हैं लालाज़ारों में

मैंने आंखों में रात काटी है
दिन गुज़ारा है ख्वाबज़ारो में

मौसमों की हसीन शाहजादी
छुप गई मेरे इस्तिआरों में

पिछले मौसम में रंग बरसे थे
अब के दम ही नहीं नज़ारों में

घिर गई लड़कियों में वह 'फारूक'
जिस तरह चांद हो सितारों में

शाख़सार : वृक्षों का झुण्ड । इस्तिआर : उपमा ।

उन नयनन के सदके जाऊँ, जो बरसें हैं सावन सावन
पा ए तलब है सहरा सहरा, दस्त ए जुनूँ है दाम दामन

ऐसा वैसा खेल नहीं है, प्रीत की बाज़ी, आग का दरिया
पर्वत बहते पानी बनकर, सूरज उगते आंगन आंगन

शहर के हंगामों में अकसर खो जाता है मेरा चेहरा
तनहाई के ताजमहल में मेरा चेहरा दर्पण दर्पण

चाक गिरेबाँ ख़ाक–बसर हैं, हमसे लाखों इस नगरी में
तेरे फैज से फिर भी अपना नाम हुआ है गुलशन गुलशन

संग परस्तों की बस्ती में शीशागारों की ख़ैर नहीं
जिनकी आंखे नूर से खाली, उनके दिल में आहन आहन

शहर को छोड़ा बन में आये, सोचा था बिसराम करें
आंख लगी तुम ध्यान में आये, फिर हम थे और उलझन उलझन

पा ए तलब : चाहत के पांव । दस्त ए जुनूँ : जुनूँ के हाथ ।
फ़ैज़ : नेकी, भलाई । संग परस्त : मूर्ति पूजक । आहन : लौह ।

बाद ए सबा से बात करूं सोचता हूं मैं
दामन पे आंसुओं से लिखूं, सोचता हूं मैं
मैं जसको भूल जाऊं नहीं मेरे बस की बात
अब उस की आरजू न करूं, सोचता हूं मैं

बाद ए सबा : प्रातः की हवा ।

बाहर से जो भी आया परेशान कर गया
हमको हमारे घर में हरासान कर गया

जाती रहीं चिनार के पत्तों की सुर्खियाँ
जाड़े का ज़ोर शहर को वीरान कर गया

ये तय है उसके सर पर हजारों का खून था
माथे पे मेरे दाग जो चस्पान कर गया

आंखें तलाश करती रहीं ख्वाब में जिसे
आज़ इस तपाक से मिला हैरान कर गया

हरासान : परेशा, क्षुब्द ।

यूँ कातिल का नाम न ले
अपने सर इल्ज़ाम ने ले

कस्में, रस्में, पास, लिहाज़
इन हरबों से काम न ले

नेकी कर दरिया में डाल
बदले में इनाम न ले

पिछली रूत का हाल सुना
इस मौसम क़ा नाम न ले

सात समन्दर का है सफ़र
सुस्त रवी से काम न ले

सुस्त रवी : आलस्य, धीमी चाल ।

चांदनी आसमान से उतरेगी
मेरे आंगन से होके गुज़रेगी

रात, जंगल, मुहीब सन्नाटा
अब यहाँ तीरगी ही उतरेगी

बहते पानी पर किसने लिखा है
नाव कागज की पार उतरेगी

बोए गुल बन के जब तू आजाए
दशत में भी बहार उतरेगी

बात तेशा नहीं मगर फिर भी
बात पत्थर के दिल में उतरेगी

मुहीब : भयानक । तीरगी : अंधेरा । बोए गुल : पुष्प की सुगन्ध
दशत : जंगल, निर्जन स्थल । तेशा : बढ़ई का एक नोरुदार यन्त्र

बासी शब्दों के पैकर
गाड़ो मिट्टी के अन्दर

झूठी बातों की उतरन
बिकती है चौराहे पर

चेहरा मेहरा खाल–ओ–खत
तस्वीरों की खाली घर

तूफानों की आमद है
पंछी लोट रहे हैं घर

लिखदे सब कुछ मेरे नाम
दरिया, तूफाँ और भंवर

पैकर : चेहरे, सूरतें । खाल ओ खत : नैन–नक्श

गुलाब खिलते हैं जब जिस्म के जज़ीरों पर
बहुत तड़प है मेरे दिल में उन महीनो की

जज़ीरा : द्वीप ।

कहते हैं कि 'फारूक' वफादार बहुत है
इस वास्ते हर शख्स से बेज़ार बहुत है

यह शहर भी क्या खूब है इस शहर में कोई
सच बोल के जी ले तो खतावार बहुत है

बेख्वाबी व बेदारी ए शब तुम को मुबारक
हमको तो हमारा दिले बेदार बहुत है

ऐ मौज ए सबा दर पे मेरे हलकी सी दस्तक
यह रात शर्रबार शर्रबार बहुत है

दामान ए नज़र तंग है क्या जलवे समेटों
मुफलिस के लिए रोनक ए बाजार बहुत है

बेदारी ए शब : रात का जागरण । मौज ए सबा : प्रातः की हवा ।
शर्रबार : चिंगारियां बरसाने वाला । दामान ए नज़र : दृष्टि का विस्तार

परदा ए ज़हन पर उभरे हैं हज़ारों सूरज
रात देखा था किसी परदा नशीं का चेहरा

परदा ए ज़हन : मस्तिष्क पटल । परदा नशीं : बुर्क़ापोश

मिलन की रूत है हथेली पे चांद ठहरा है
गड़रिये शाम से पहले ही गांव आ पहुंचे

दर्द की रात गुज़रती है मगर आहिस्ता
वसल की धूप निखरती हे मगर आहिस्ता

आसमां दूर नहीं, अबर ज़रा नीचे है
रोशिनी यूं भी बिख़रती है मगर आहिस्ता

तुम ने मांगी है दुआ ठीक है खामोश़ रहो
बात पत्थर में उतरती है मगर आहिस्ता

तेरी जुल्फों से इसे कैसे जुदा करता मैं
जिन्दगी यूं भी संवरती है मगर आहिस्ता

वस्ल : मिलन ।

जब कोई नौजवान मरता है
आरजू का जहान मरता है

ऐ मरकज़े–ख्याल बिखरने लगा हूं मैं
अपने तसव्वुरात से डरने लगा हूं मैं

इस दोपहर की धूप में साया भी खो गया
तनहाइयों के दिल में उतरने लगा हूं मैं

बर्दाशत कर न पाऊंगा वहशत की रात को
ऐ शाम ए इन्तज़ार बिफरने लगा हूं मैं

अब दिल में तेरी याद की इक शमा तक नहीं
तारीक रास्तों से गुज़रने लगा हूं मैं

मरकजे ख्याल : विचार का केन्द्र । तसब्बुरात : कल्पनायें ।
वहशत : भय, दीवानगी, धबराहट । शाम ए इन्तजार : प्रतीक्षा की शाम।

अकीदत की दीवार कच्ची नहीं
यह वह रेत है जो बिखरती नहीं

हवा यूं तो चलती है बरसात में
मगर मेरे आंगन में आती नहीं

मुहब्बत को आसां न समझो मियाँ
यह वह बाढ़ है जो उतरती नहीं

नयी जनवरी को यह क्या हो गया
कि खुल कर कभी बर्फ गिरती नहीं

लहू–रंग सारा नगर हो गया
जमीन बारिशों को तरसती नहीं

खुली आंख तो चार सू बर्फ है
बरसती है लेकिन गरजती नहीं

अकीदत : श्रद्धा ।

मेरी मरज़ी, न दे स़बात मुझे
बे यकीनी से दे नजात मुझे

उनकी नज़रें उठीं मेरी जानिब
याद है पहली वारदात मुझे

हर बला से रहेगा तु महफ़ूज़
इस सफ़र में जो रखले साथ मुझे

रोज़ मिलता हूँ मयकदे में उसे
खूब पहचानती है रात मुझे

मैं तुझे जानता हूँ हरजाई
क्यों बताता है अपनी ज़ात मुझे

मुझको देती है डाल डाल हवा
छाँव देते हैं पात पात मुझे

स़बात : करार, दृढ़ता

मेरे धड़ से हुआ है मेरा सर अलग
अब करो मेरी गर्दन से खंजर अलग

मेरी तक़दीर में दोनों लिखे गये
तुम ने क्यों कर लिये फूल पत्थर अलग

धूप हालात की सेंक ली तो हवा
मेरी आँखों से ख्वाबों का मन्ज़र अलग

जब तलक दम में दम था मेरे साथ थे
अब मेरे दोस्त रहते हैं अक्सर अलग

वह भी दिन थे आप से मेरी शनासाई न थी
जान लेवा इतनी उलझन, ऐसी तनहाई न थी

शनासाई : जान पहचान

सहर हुई तो तबीयत मेरी फड़क उठी
रंगों में साज़ बजे बेखुदी धड़क उठी
चली हवा तो अजब हाल हो गया मेरा
मेरे वजूद में इक आग सी भड़क उठी

मेरे नसीब को ख्वाबों का कारोबार न दे
मुझे शराब की तोफ़ीक़ दे, खुमार न दे
मेरे दिमाग को नींदों का वन मुबारक हो
मेरी निगाह को तकलीफ ए इन्तजार न दे

तोफीक : शक्ति, हिम्मत, चाहत के अनुसार कार्यपूर्ति ।
तकलीफ ए इन्तज़ार : प्रतीक्षा की पीड़ा ।

वो जब से हाल में शामिल हुआ है
मेरा किस्सा किसी काबिल हुआ है

कोई इतना बदल सकता है कैसे ?
उसे पहचानना मुश्किल हुआ है

हज़ारों ख्वाब देखे जागते में
सहर ख़ेजी से क्या हासिल हुआ है

मुझे पहचानती है सारी दुनिया
वह जब से रौनक़े महफिल हुआ है

मैं अपने हौसले खैरात कर दूं
किसी का नक्शे पा मंजिल हुआ है

सहर ख़ेजी : प्रातः उठना नींद से । रौनक़े महफ़िल : सभा की शोभा
हौसला : हिम्मत । ख़ैरात : दान । नक़्शे पा : क़दमों के निशां ।
मंजिल : लक्ष्य ।

अपनी गज़ल को खून का सैलाब ले गया
आंखे रहीं खुली की खुली ख्वाब ले गया

शब ज़िन्दादार लोग अंधेरों से डर गये
सुबह ए अज़ल से कौन तबो ताब ले गया

उर्यां है मेरी लाश हकीकत की धूप में
मैं अपने साथ यादों का बर्फाब ले गया ।

सुबह ए अज़ल : आदि प्रभात । तबो ताब : चमक दमक ।
उर्यां : नग्न । बर्फ़ाब : सर्द पानी जो बर्फ़ के पिघलने से निकले ।

बस्ती से दूर जाके कोई रो रहा है क्यों
और पूछता है शहर तेरा सो रहा है क्यों

रुसवाइयों का डर है न पुरसिश का खौफ है
दामन से अपने दाग ए वफ़ा धो रहा है क्यों

क्या लज़्ज़त ए गुनाह से दिल आशना नहीं
शर्मिंदा मेरे हाल पर तू हो रहा है क्यों

वह उनकी दिल फरेब दिलाराइयाँ कहां
माज़ी के खवाबजार में अब खो रहा है क्यों

फारूक जी का कब कोई पुरसान ए हाल था
तनहाइयों के ग़ार में दिल रो रहा है क्यों

पुरशिश : पूछगछ । लज़्ज़त ए गुनाह : पाप का स्वाद ।
दिल फरेब : दिल को धोका देने वाली । ख्वाबज़ार : स्वप्नलोक ।
माज़ी : अतीत । पुरसान ए हाल : सहायक, हाल पूछने वाला । ग़ार : गुफा ।

वही मैं हूं वही ख़ाली मकाँ हैं
मेरे कमरे में पूरा आसमाँ है

दयारे ख्वाबो चश्मे दिल फ़गाराँ
जज़ीरा नींद का क्यों दरमियाँ है

सकूते मर्ग तारी हर शजर पर
यह कैसा मौसम ए तेगो सनाँ है

चमन अफसुर्दा गुल मुरझा गए हैं
खिज़ाँ की ज़द पे सारा गुलिस्ताँ है

भुला दी आपने भी वह कहानी
मुहब्बत जिसके दम से जावदाँ है

दायरे ख्वाबो चश्मे दिल : सपनों, नयनों और दिल का क्षेत्र ।
फ़गाराँ : जला हुआ । जज़ीरा : द्वीप । सकूते मर्ग : मृत्यु का मौन ।
तारी : छाया हुआ । शजर : पेड़ । मौसम ए तेगो सनाँ : भालों और तलवारों का मौसम।
अफ़सुर्दा : मुर्झाया हुआ । जावदाँ : जीवित

न इनको चैन गलियों में न घर में
परेशाँ हाल फिरते हैं नगर में

वतन की आबरू पर मिटने वाले
नया सौदा नहीं क्या कोई सर में

मैं खाली हाथ निकला था सफ़र पर
बस उनकी याद थी रखते सफर में

तुम्हारा नाम लेकर आज हम को
पुकारा किसने राहे पुर खतर में

ग़मे दौराँ से निपटूंगा तो खुद ही
गमें जानाँ से पाऊँगा मफ़र में

रख़ते सफर : यात्रा की सामग्री । राहे पुरख़तर : खतरों से ग्रस्त रास्ता
मफ़र : मुक्ति ।

हम कौन सी मंजिल से आये थे बता देना
तुम प्यार के जीनों से उतरे थे बता देना

चमके थे गुलिस्ताँ में शबनम की तरह जब हम
खुशबू की तरह कैसे बिखरे थे बता देना

हम बरगे गुल ए तर में तनवीर के धारे हैं
किस नूर की वादी में ठहरे थे बता देना

जिन खानाबदोशों से आबाद हैं वीराने
कब शहर की गलियों से गुज़रे थे बता देना

ज़ीना : सोपान । गुल ए तर : भीगे हुए फूल ।
तनवीर : प्रकाश ।

पूछते क्या हो सूरत ए हालात
शहर है और योरिश ए सद्‌मात

सुबह बटती है, शाम बटती है
दर्द की भीख, जख्म की ख़ैरात

बदहवासी की भीड़ में कैसे
किस का चेहरा करेगा कौन शनाख्त

नोक ए खंजर पर थम गया सूरज
रत जगे से मिली है यह सौगात

बेयकीनी है चमश ए हैरान में
दिल में कुछ भी नहीं बजुज़ शुबहात

रोज़ इक हादसा गुज़रता है
क़हर इस शहर पर बपा दिन रात

योरिश ए सद्‌मात : सदमों का हमला । ख़ैरात : भीख ।
शनाख्त : पहचान । नोक ए खंजर : तलवार की नोक ।
बेयकीनी : अस्थिरता । चश्म ए हैरान : विस्मित दृष्टि ।
बजुज़ शुबहात : संदेह के अंश ।

हर ओर हैं लाशों के लगे ढ़ेर यहाँ
ऐ दस्त ए क़ज़ा आम है अंधेर यहाँ
ज़ालिम का यहां नाम बहुत ऊँचा है
मज़लूम ही मज़लूस हुए ज़ेर यहां

दस्त ए क़ज़ा : भाग्य का हाथ, मृत्यु का हाथ ।

नज़्में

सुनहरी दरवाज़े के बाहर

लरज़ते बदन
रंग कोहरे में लिपटे हुये
अध्मरी रोशनी का कफ़न ओढ़कर
मौत की सरज़मीन पर
उजालों पर कुर्बान होने से होने से पहले
बहुत देर तक
अपने अहसास की आंच सहते रहे ।

शाम
नीम–तारीक राहों पे माथा रगड़ती रही
कांपती थरथराती, शबे ग़म के सांचे में
ढ़लने से पहले
बहुत देर तक
सर्द फ़ानूस के पास ठहरी रही ।

चाँद
आकाश के गहरे नीले समन्दर में
तारकों की इन्द्रसभा से
बहुत देर तक
मौत की सरज़मीन पर
उजालों की गुलपाशियां कर रहा था

शंबे गम : दुख की रात । गुलपाशियां : पुष्प वर्षा करना ।

लहद–ता–लहद, कोई साया न खाका
कदम ता कदम मंजिलों के निशां गुम

मकीनों से खाली मकानों के दर
तख़्तियां रहने वालों के नामों की लेकर
बहुत देर तक मुंतज़िर थे मगर
कोई दस्तक न आहट ।

इधर
बेज़ुबां शहर की तीरगी में
लरज़ते बदन
कैफ़ ओ कुम के बदलते हुए ज़ाबियों में
उछलते छलकते बिखरते, सिमटते रहे

और कोहरे में लिपटे हुए
शाख दर शाख रोशनी से गुज़रकर
सलीबों के साये में दम ले रहे हैं ।

❐

लहद ता लहद : कब्र से कब्र तक । मकीन : मकान में रहने वाला ।
मुंतज़िर : प्रतीक्षारत । तीरगी : अंधेरा । ज़ाविया : कोण ।
शाख दर शाख : डाली से डाली से तक । सलीब : फांसी का तख्ता ।

और मैं चुप रहा

मेरे हाथों से मेरी चिता बन गई
मेरे कांधों पर मेरा जिनाज़ा उठा
नोक ए मिजगान से कुरतास ए अयाम पर
मेरे खून से मेरा नाम लिखा गया
और मैं चुप रहा

मेरे बाजार, कूचे, मेरे बाम ओ दर
मेरी नादारियों से सजाये गए
मेरी अफ़कार, मेरी मता ए हुनर
मेरी महरूमियों से बसाये गये
और मैं चुप रहा

मेरी तक़दीर का जो भी खाका बना
पीले मौसम के पत्तों पर लिखा गया
मेरी तस्वीर मुझ से छुपाई गई
मुझको नादीदा ख्वाबों में देखा गया
और मैं चुप रहा

नोक ए मिजगान : बरौनी की नोक ।
कुरतास ए अयाम : समय का कागज़ ।
बाम ओ दर : छत और दीवारें । अफ़कार : कवि की रचनाएं ।
मता ए हुनर : कला की पूंजी । महरूमी : नाकामी, निराशा ।
नादीदा : अनदेखे ।

मेरे अलफ़ाज मानी की तलवार से
सरबुरीदा हुये गुनगुनाते रहे
मेरे नग्मे गदाओं में बांटे गये
बरगुज़ीदा हुये गुनगुनाते रहे
और मैं चुप रहा

मुझसे मेरी तमन्ना के गुल छीनकर
ज़र्द मौसम ने जश्न ए बहारां किया
बर्फ मेरे नशीमन पर आके गिरी
धूप निकली तो उसको हरासां किया
और मैं चुप रहा

मेरे सरसब्ज जंगल उजाड़े गये
मेरी झीलों में नक्र बसाये गये
कोह ए मारां की तक्कदीस लूटी गई
बेहिसी के मक़ाबिर सजाये गये
और मैं चुप रहा

❒

अलफ़ाज : शब्द । मानी : अर्थ । सरबुरीदा : सरकटे । गदा : फ़कीर
बरगुज़ीदा : आदरणीय । तमन्ना : चाहत । जर्द : पीला ।
जश्न ए बहारां : वसन्तोत्सव । नशीमन : ठिकाना । हरासां : परेशां
कोह ए मारां : श्रीनगर स्थित पहाड़ी जिसे हरिपर्वत कहते हैं ।
तक्क़दीस : पवित्रता । बेहिस : बेजान । मकाबिर : क़बरें ।

गोश्त का राजा
(एक बलती कहानी)

पहाड़ के उस तरफ चकोर
अपने बच्चे लिये
तराई से उतर रहे हैं
मेरी जुल्फें घुटनों से भी नीचे आ गई हैं

फूल खिल रहे हैं
बुनफ़शा गोल मटोल पत्थरों की ओर से
मेरी तरफ़ देख रहा है
और अचानक
दुरि ना सुफ़ला से चांदी की धार
छूट कर बहती है
जी चाहता है खार खार शाखे गुलाब को
अपने जिस्म में उतार दूं

बुनफ़शा : एक खुद उगने वाला फूल जो दवा के काम आता है ।
दुरि ना सुफ़ता : अटूट मोती अर्थात सूर्य ।
खार : कंटक ।

और फिर लहू के समन्दर पर
सफेद फूलों की पत्तियां
यू तैरने लगीं
जैसे ख्वाब के समन्दर में
मेरे वजूद में
मरमरी किशतियां तैरती हैं ।

सोचती हूं
मेरी रगों में ठहरा हुआ सैलाब
कब तक अंधेरी रात के बांध से बंधा
रहेगा ।

वह आयेगा
और मैं मुर्झा गई होंगी
चकोर पहाड़ी के इस तरफ लोट आये
उन के बच्चे बड़े हुए
बिखर गये ।

मेरी जुल्फें मेरी ऐड़ियों को छुपा रही हैं
वह आयेगा
और मैं मुर्झा गईं होंगी ।

वह खूंख्वार दरिन्दों का शिकारी
मेरे जिस्म के जंगल में
कोहराम क्यों नहीं मचा देता

मरमरीं : संगे मरमर सी कोमल।

वह मेरी टहनियां मरोड़ कर
क्यों नहीं रख देता ।

मैंने एक भेड़िया देखा है
मैं उसे शफ़ाफ शहद की धारों से
नहलाऊंगी,
मैं उस भेड़िये के बालों से अटै
जिस्म को
अपनी ज़बां से चाट लूंगी ।
मैं नहीं ठहर सकती
मैं मुर्झाने से पहले
अपनी टहनियां झाड़ लूंगी ।
वह आयेगा
और भेड़िये के पंजों से
रौंधी हुई
शेरनी का शिकार खेलेगा ।

❑

शफ़ाफ : साफ

तेज़ाब, आकार खुशबू का

नीबो पहाड़ी के दामन में
एक गांव है
मदराबन
जहां मैं पैदा हुआ था
(मेरा नाम मुहम्मद फ़ारूक़ है)

मेरी मां सेब की तरह सुर्ख और मीठी थी
गुलाब की तरह कोमल और मुअतर
वह खुशबू का आकार थी
लगी लपटी, छल कपट, झूठ
यह लफ़्ज़ उसने सुने तो थे
आज़माये नहीं थे
दोहराये नहीं थे ।
रेडियो से 'नज़ार कबानी' का
क़सीदा नशर होता
या कोई मुग्ग़ानी
काली दास का ऋतु सम्हार सुनाता
तो वह फूट फूट कर रोती
मैं पूछता रोने का कारण

क़सीदा : प्रशंसात्मक कविता । नशर : प्रसारित ।
मुग्ग़नी : प्रभावित करने वाला ।

तो कहती :
देवताओं की इन ज़बानों में
जादू का असर है
इन में सत्य की दिशा
और सिरातुल मुस्तकीम की निशानदिही है ।
मैं बारहा उसकी सादगी पर रोलेता ।

मेरा बाप दांतों में डायनामाइट दबाये
उंगलियों के पोरों में तेज़ाब के
बन उगाता है
और पीले मुर्दा मरियल कागज के चेहरे पर
लहू के फूल काढ़ता है ।
खुद से अलग होकर, खुद पर मिटकर
अपनी जायदाद से प्यार करने लगता है
वह आठ जहाजों का मालिक है
जो उसने वक्त के समन्दर के
पानियों पर उतार दिये हैं
और खुद एक कन्ट्रोल रूम में बैठकर
उनकी हरकात का तअयुन करता है

सिरातुल मुस्तकीम : सीधा रास्ता ।
निशानदिही : ठिकाना बताना, पता देना । हरकात : हिलना ।
तअ़युन : निश्चित, काबू, निर्णय ।

मैं भी उसका एक जहाज़ हूं
पत्थर चबाना
पलकों की झाड़ियों पर सिदरा उगाना
सुबह सवेरे मस्जिद के दरवाजे पर
खुदा से
आंखे चुराकर गुज़र जाना
और खुदा के महबूब पर
फरेफ़ता होकर रक़ाबत बांट लेना
उसकी अदा बन गया है ।

मैं सुर्ख मीठे सेब और
तेजाब के इसी इमतिज़ाज की
पैदावार हूं,
मैं कौन हूं ?

□

सिदरा : बेरी का पेड़ । फ़रेफ़ता : आशिक ।
रक़ाबत : शत्रुता । इमतिज़ाज : मिलावट ।

पैरहन

मेरे पैरहन में जुड़े हुये
गये मौसमों के गुलो सुमन
मेरे पैरहन में जुड़े हुये
थे रिवायतों के कई गुहर
मेरी बात से मेरी ज़ात तक
गये मौसमा का गुदाज़ था

मुझे देखकर यहां बुलहवस
मेरे पैरहन के गुदाज़ को
मेरे नग़्मा ए जां नवाज को
लगे बेचने सरे राहगुजर
मैंने पैरहन को जला दिया
मैं बरहना राह पर चल दिया

❑

गुहर : मोती । गुदाज़ : नरम, कोमलता ।
बुलहवस : चाहत में डूबा हुआ ।
नग़्मा ए जां नवाज़ : चित्त को खुश करने वाला नग़्मा ।
बरहना : नग्न ।

स्याह सफेद

बहुत से चेहरे मलूल होंगे
ख़िजां रसीदा गुलाब जैसे
हवा ए आतश दहन को छूकर
गुलाब चेहरे
शराब चेहरे
किताब चेहरे
बनेंगे यूं बेहिसाब चेहरे
ज़ियां दिलों का
अज़ाब चेहरे,
प्यास होगी दहन दहन जब
वही पियेंगे रतूबतें जो
उबलते चश्मों से बह पड़ेंगी
बबूल खाकर जबान दांतों और मसोड़ों में
रेज़ा रेज़ा
लहू के कतरों में बह पड़ेगी

मलूल : दुखी । ख़िजां रसीदा : पतझड़ से प्रभावित ।
हवा ए आतश : अग्नि की लपटें । दहन : मुंह ।
अज़ाब : मुसीबत, पीड़ित, पीड़ादायक । रतूबतें : नमी ।
रेजा रेजा : टुकड़े टुकडे । ज़ियां : हानिकारक

नफ़्स नफ़्स भूख
आग बनकर
मसाम अंदर मसाम होगी
बहुत से चेहरे जमील होंगे
खिले खिले बस गुलाब जैसे
बुलंदियों पर गुलों के झुरमुट में
सब्ज मौसम की ताज़गी में
घने दरख्तों के सायबां में
सकूत का राग सुनते सुनते
निदा निदा
बेसदा सदायें
खमोशियों का लिबास पहने
जमील चेहरों को चूम लेंगे ।

न कोई मिम्बर
न कोई वाईज़
सुखनतराजी का बन्द दफ़्तर
ख़िताब होगा न बात होगी
सकूत होगा ।

नफ़्स : सांस, दम । जमील : सुन्दर, ज्योतिर्मय ।
मसाम : शरीर के वह सुराख जिनमें से पसीना निकलता है ।
सकूत : मौन । निदा : पुकार, आवाज । बेसदा : आवाज़ रहित ।
मिम्बर : वाईज के लिए बना स्टेज । सुखनतराज़ी : बुद्धिमानी के भाषन

चमकते चश्मों का साफ पानी
निशस्त पेड़ों के सायबां में
हजारों सागर किनारे आबे रवां मिलेंगे
सकूते पयहम के जाम होंगे ।
जहाने सूद ओ जिया में जिसने
यह बात मानी,
पहाड़ इस तरह क्यों खड़े हैं
ज़मीन मुसतह हुई थी कैसे
उसी का चेहरा जमील होगा ।

□

निशस्त : जगह, बैठक । किनारे आबे खाँ : बहते पानी के किनारे ।
सकूते पयहम : लगातार मौन ।
जहाने सूद ओ जियाँ : हानि एवं लाभ की दुनिया ।
मुसतह : समतल ।

कविता

खून खून पर्वत ने
ज़ख्म ज़ख्म किरणों की
ओढ़नी को पहना है

शाम शाम वादी में
बर्फ बर्फ सर्दी में
ताल ताल आंधी पर
नाचती है तितलियां

दाम दाम जुल्फो में
अश्रुओं की लड़ियों में
जुगनुओं के मेले हैं

नींद नींद आंखों में
ख़्वाब ख़्वाब बेदारी
फैसले की तैयारी
जायज़ों के तजज़िये

जायज़ा : जांच पड़ताल ! तजज़िया : पहचान देना, अलग करना ।

ख्वाब के समन्दर में
इक जहाज उतरा है
चांदनी भी उतरी है

फल फूल वादी ने
ख़ार ख़ार राहों पर
रोशनी लुटाई है
पा बरहना सुबहों से
खून फिर टपकता है

जोये खून उभरती है
मलगजे उजालों पर ।

□

वादी : घाटी । ख़ार : कांटा । पा बरहना : नंगे पांव ।
जोये खून : रक्त की धार ।

शीर्षक

मैं अपनी लोह ए बदन तुम को सौंप देता हूं
जो लिख सको तो लिखो इस पर नोक ए खंजर से

नई बहार नई आरज़ू का अफ़साना
नई किताब नई रोशनी का पैमाना

□

लोह ए बदन : शरीर की तख्ती ।
नोक ए खंजर : खंजर की नोक ।

और फिर यूं हुआ

एक फैली हुई शाख काटी गयी
पेड़ घायल हुआ
धूल के पर्दे से साज़ के पर्दे तक
सरसराती हवाओं ने नौहे पढ़े
शाख से शाख तक रूदन ध्वनि आ गयी
और फिर यूं हुआ
शाख कुछ रोज में एक लाठी हुई
जिससे रेवड़ को हांका गया
पेड़ घायल हुआ
पात गिरने लगे
पेड़ खाली हुआ
साया साया हरेक दिशा आयी सदा
और फिर यूं हुआ
मेरा इक हाथ कट कर ज़मीन पर गिरा
मेरा बिछड़ा हुआ हाथ
जलती हुई रेत पर
फड़फड़ाने लगा
उंगलियां हाथ की गुनगुनाने लगीं
हद से बढ़ते हुए हाथ तोड़े गये
हद से बढ़ती हुई शाख काटी गयी

❑

तन्हाई

शोर की बस्ती से निकले
और इक पुरशोर नदिया के किनारे पर खड़े
सोचते हैं
वक्त अब कैसे कटे
सामने काला समन्दर याद का
दूर तक भूरा पहाड़ी सिलसिला
सब्ज सोना
पेड़ों की छाया में घुलमिल गया
धूप काली चोटियों पर सो गयी
नीली पीली तितलियां सरफिरी फूलों को चूमती
बहते पानी पर उड़ीं
कुछ बह गयीं
कुछ कह गयीं
शाम का सूना नगर आबाद कर

हाथ की गहरी लकीरों को बदल
फूल से गालों पर आंचल न डाल
होंठ प्यासे हैं इन्हें अमृत पिला
रात को गुलनार कर नज़दीक आ

❑

पुरशोर : शोर युक्त ।

निर्वाण

हां इसी पेड़ तले शाम ढ़ले आई थी
इससे पहले भी कई बार वह रंगी साअत
गुनगुनाती हुई हर शाम यहां से गुज़री
कितने युग बीत गये और न उसे याद आया
एक शाहज़ादा उसी पेड़ तले बैठा है
और सन्नाटे में उस पेड़ पे तनहा पंछी
मद भरे स्वर में कोई बोल सुना जाता है

□

साअत : मुर्हूत, विशेष समय ।

याद दिहानी

वह दिन याद नहीं क्या तुम को
जब हम दोनों रात गये तक
तहखाने के अंध्यारों में
सिलवट सिलवट टाट पे लेटे
इक दूजे को काट रहे थे

अंध्यारे की चादर ओढ़े
छुप जाने की बिनती करते
और फिर डरते
डरते डरते हाथ उठाकर दोनों कहते
'बार खुदाया – पाप निवार'

❑

बार खुदाया पाप निवार : यह वाक्य कश्मीरी सूफी कवि नुन्द ऋषि की कविता से लिया गया है । बार खुदाया बार खुदाया..... के अर्थ हैं हे प्रभु, मेरे पाप निवार लें ।

एतिराफ़

मुझ को सूली पर चढ़ा दो
मुझे संगसार करो
मेरे होंठों के दरीचे को
मुक़्फ़िल कर दो
मेरी आंखों की बसारत के
दिये गुल कर दो
मेरे कानों में
पिघलता हुआ सीसा भर दो

मैंने चढ़ते हुए सूरज की
परस्तिश की है
डूबते चांद को गिरने से
बचाया तुमने !

□

संगसार : पत्थरों से मारना । मुक़्फ़िल : ताला लगा हुआ ।
गुल करना : बुझा देना । परस्तिश : उपासना ।

एक कविता

पीला सूरज
नीली मिट्टी
काले साये
आधा सीना!
ज़ेरे क़बा
सांसो की खुशबू का कोहरा
कोयल पगडंडी पर तनहा
बहकी सड़के
मटियाले दिन
मोटर गाड़ी, तांगे लारी, लंगड़े लूले
बहरी सड़कें
अंधे, टूटे फूटे दुपाये
कमसिन बच्चे, लंच के डिब्बे
शोर शराबा, मेले ठेले
शूं–शूं, गूं–गूं
खट–खट, ठक ठक
आवाजों का पागल सागर

ज़ेरे क़बा : पेराहन के ढका हुआ।

पक्की काली, राहगुज़र पर खून के धारे
फूट बहे और सूख गये हैं
कोयल पगडंडी पर तनहा
कूक रही है

पीला सूरज डूब गया है
भूरी मिट्टी लाल हुई है

□

मन्टो की सुलताना बोली :

जब जब जिसने चाहा, आया रातों की तनहाई में
सुबह हुई तो ऐसा देखा, जैसे एक पराई मैं
लोगों की क्या बात करें, वह आते जाते रहते हैं

तोपों की घन घन ने, पूरे नीलगगन को घेरा है
जिस खाई में युद्ध हुआ था, उसमें फौज का डेरा है
युद्ध छिड़ते ही गिद्ध पेड़ों पर घात लगाये रहते हैं

उजड़े घर के जिस आंगन में सारा बचपन गुज़रा था
जिसकी टूटी दीवारों पर, मायूसी का पहरा था
आज उसी के घर द्वार पर दीप सजाये रहते हैं

जग क्या जाने मन के अंदर कितने दरिया बहते हैं
जिस्म हमारा इक रस्ता है, लोग गुज़रते रहते हैं
चुप रहते हैं, ग़म सहते हैं और सदा यह कहते हैं
'भेद दिलों के जो जाने है, वह योगी कब आयेगा '

□

नींद क्यों नहीं आती

रात खामोशी लेकर
झूलती है पेड़ों पर
जंगल जंगल वीरान हैं
रोशनी के हंगामे
अंधकार बरसता है
ऊंचे नीचे टीलों पर
नींद क्यों नहीं आती

मैं उदास रहता हूं
दिन के गर्म मेले में
मैं मलिन रहता हूं
शाम के झमेले में
मैं शराब पीकर भी
होशियार रहता हूं
जो भी दिल पर लग जाए
मैं वह घाव सहता हूं
सोचता हूं दुनिया में
मैं कितना अकेला हूं
चांदनी के पहलू में

मनभावन किरणों को
ओढ़ कर मैं लेटा हूं
नींद क्यों नहीं आती

नींद एक खुशबू है
रात की फ़िज़ाओं में
गली गली भटकती है
मेरे घर नहीं आती
मुझसे दूर रहती है
फिर मैं खुद से कहता हूं
नींद क्यों नहीं आती

❐

1984 की एक शाम

मुझे खबर है कि
तू पहाड़ों के साये में
सुनहरे मौसम के पीले पलों से
जिन्दगी की हंसी चुराकर
स्याह कमरे में मुंह छुपाए
श्वेत अन्दर श्वेत मौसम की आस में है

तुझे खबर है कि
मैं सुलगती उदास शामों की
अधमरी उजाड़ बस्ती में
बे इरादा
हवा के कांधों पर हाथ रख कर
गतिशील मेघें की ओढ़नी ले
तेरे क्षितिज पर बरस रहा हूं

मुझे खबर है कि
तू चिनारों के लाल पत्तों से
शरीर ढ़ांपे
मुझे अंतरिक्ष में छुपा रही है

❐

मौत

अजीब क्षण है
मौत का भी
न भय साथी
न आस हमदम

अजीब प्राणी है आदमी भी
जो मौत के डर से कांपता है
जो आशा की डोर थामता है
उसे पता है कि मौत क्या है
मगर वह फिर भी
आस औ भय की दीवार का कैदी
खुद अपनी करनी से भागता है
उसे पता है कि मौत जीने का आसरा है
उसे पता है
अजीब क्षण है मौत का भी
न आस हमदम
न भय साथी

□

अहसास

अगरचि पत्ते बेशुमार हैं
शजर तो एक है (1)
जवानी में
उजले दिनों की सुनहरी धूप में
मेरे पत्ते फूल गिर गये ।
अब मैं भी सच की आगोश में
जज़्ब होने के लिए तैयार हूं ।

□

शज़र : पेड़ । आग़ोश : गोद ।

वेटिंग लिस्ट

कोई रुक जाये तो
तुम जाओगे,

कोई रुक जाये तो जाओगो इसी गाड़ी से
बेकरारी को दिले ज़ार से ख़ारिज कर दो

तुम भी जाओगे अगर इज़न ए सफ़र मिल जाये
तुम भी जाओगे अगर कोई यहाँ रुक जाये

❑

दिले ज़ार : कोमल ह्रदय
इज़न ए सफ़र : यात्रा की घोषणा, यात्रा की अनुमति ।

एक कविता जंगलों के नाम

धरती अग्नि उगल रही है
क्षितिज से तेजाब गिर रहा है
धरा अग्नि पर लोटती है
हवाएं चेहरा बिगाड़ती हैं

सुना तो था
आज देखते हैं
यहां हवाओं के अग्निगुण हैं

आदि से लेकर अंत तक बेकरार होंगी
आत्मायें हमारी
जन्म जन्म तक
भटक भटक कर
नाश नाश बेअन्त विनाश का नाम लेकर
न पेड़ होंगे
न पक्षियों के सुरीले नग़मे
शिवालिका पर न कोई जोगी

पुकार बसन्तोत्स्व की देगा,
कोई कलन्दर न कोई रूमी
नए सिरों की तलाश करने
किसी निर्जन में जा रूकेगा

□

कश्यप ऋषि की नगरी जीवे

पीली मिट्टी, सोना जैसी
प्यारी गलियां इन्द्रधनुष,
कश्यप ऋषि ने नगर बसाया
खुद जाने किस ओर गया
ऊँचे पर्वत
शिव की वाणी
हक अल्ला हू
मस्जिद खूब
टहनी टहनी झूल रहे थे रंग बिरंगे पंख पखेर
फल सी नगरी
सूरज बस्ती
ज़रा ज़रा बांटे नूर
कश्यप ऋषि की नगरी जीवे
हम इसके दीवाने हैं ।

□

ज़रा : कण । नूर : प्रकाश

जब बुढ़ापा आयेगा

जब बुढ़ापा आयेगा
बाल जब झड़ जायेंगे
नींद से बोझल तेरी पलकों पर
आयेगी थकन
पास अग्निपात्र के
लाल होगा जब तेरा चेहरा
तो ज्वाला की तपन
तुझसे चुपके से कहेगी :
याद कर

जब तेरी पलकों के नीचे मदिरालय बसे थे
जब तेरी पलकों का साया
रात से भी स्याह था,
याद कर

जब तेरे रंग ढ़ंग पर हर इक सुमन को गर्व था
जब तेरी मुस्कान से कलियां चटकने की ध्वनि
आती तो आवारा तेरा
आत्मा में तुझको छुपा
तेरी मुसाफिर आत्मा को नाम देता प्रेम का
और तेरे चेहरे पर ठहरी ताज़गी को देखता

याद कर
जब बुढ़ापा आयेगा
तुझको बहुत तड़पायेगा

□

बचपन

जल हलकी फुलकी बातों से
गीतों की ज़ंजीरे बनती थीं
जब छोटे-छोटे शब्दों से
चिंतन की मशाले जलती थीं

हर चेहरा अपना चेहरा था
हर दर्पण अपना दर्पण था
जो घर था अपना ही घर था
हर आंगन अपना आंगन था

जो बात अधरों तक आती थी
वह दिल से निकलकर आती थी
कानों में अमृत भरती थी
और दिल को छूकर जाती थीं
वह समय बहुत ही प्यारा था
वह घड़ियां कितनी मीठी थीं

जिस समय की उजली राहों पर
आरम्भ तो है पर अंत नहीं
वह समय कहां छुप कर बैठा
जिस समय का कोई नाम नहीं

❐

मश्वरा

बंद कमरों में बहुत वक़्त गुज़ारा तुमने
खिड़कियां खोल दो,
दर खोल दो
आ जान दो
नर्म चमकीली तरहदार हवा के झोंके
जिस्म दीवार बने
उसको हटा दो ऐसे
जैसे दीवार से तस्वीर हटा दे कोई

❒

एक कविता

मेरी असफलतायें
शुभ चाहने वाले पड़ोसियों की तरह
मेरी साथी बन गई हैं
मेरे घर के खुले दालान में
बिखरी पड़ी कुर्सियों पर
घंटों बैठी रहती हैं
जैसे मेरे ही परिवार के सदस्य हों ।

सच तो यह है
कि मेरी असफलतायें
मेरी दीर्घ संगत में
मुझ जैसी लगने लगी हैं
'संगत मन पर छाप धरे '।

दिसम्बर की विषाक्त शाम
कितनी हृदयाकर्षक और जोशीली हुआ करती थी
जब मैं मस्ती के खज़ाने लुटाता
बर्फ से अटी पड़ी सड़कों पर दौड़ लगाता था ।

और अब मेरा हमराज़ मेरा अकेलापन
मेरे चेहरे पर सर्दी की तीक्षणता का दर्द पढ़ लेता है
और मेरी कोई छोटी सी असफलता
मेरा हाथ बन जाती है

और गीली लकड़ी का टुकड़ा
बुखारी में डाल देती है
इस से कमरे में दुर्गन्ध तो फैल जाती है
परन्तु मेरा सुन्न और बेजान शरीर
ऊष्णता अनुभव करता है
और मैं ऊंघते ऊंघते
जागते में सो जाता हूं

□

रेत गीत

पत्तों के पहनावे पहने
टहनी टहनी सोई है
मिट्टी के पीले टीलों पर
किसने चांदी बोई है
शबनम शबनम अंगारे हैं
पत्ती पत्ती ज्वाला है
निर्जन निर्जन बात चली है
रेत बहुत ही रोयी है
कुछ भी हाथ न आया तेरे
घाव लगे बस हाथों में
बरसों तक कुंदन की खातिर
तूने मिट्टी धोयी है

❑

एक परी आकाश से उतरी

एक परी आकाश से उतरी
नीली रात के सन्नाटे में
सुबह हुई जब सूरज निकला
उसने देखा टूटे दर्पण
अंधी बस्ती से गायब थे
गूंगी बस्ती के आंगन में
सूखे पेड़ की इक डाली पर
एक पपीहा बोल रहा था....

□

1990 की एक सुबह

भारी काला कम्बल ओढ़ के सोया हूं
दिन निकला है
सूरज गर्मी लाया है
मैं स्वप्नों की गहरी काली गुफ़ाओं में
भय की तलवारों के नीचे बैठा हूं ।
मुझको डर है
वह आयेंगे
जिनकी आंखें भला बनकर
दिल में घाव बनाती हैं

मुझको डर है
वह आयेंगे
वह बिन चेहरा लोग तो बातें करते हैं
कान भी मनुष्यों के जैसे
होंठ गुलाबों जैसे लेकिन
खून उगलते रहते हैं ।

चेहरे ढ़ांपे
असुरों के वारे न्यारे
अपने हाथों फूल मसल कर रखते हैं
मैं डरता हूं
वह आयेंगे
मुझसे मेरी जन्में, ग़ज़लें,
मेरी बातें, मेरी यादें
और मेरा परिहास
जो हर सभा में फूल खिलाता है
मेरे वाक्य जो मेरी पहचान बने हैं
सब कुछ राख करेंगे जालिम ।

दिन निकले तो मैं डरता हूं
रात भए तो मैं डरता हूं
भारी काला कम्बल ओढ़ के सोया हूं

❑

शुद्धि-पत्र

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ नं०	पंक्ति
शायदी	शायरी	8	12
कमानी	रूमानी	23	9
पगाल	पागल	24	5
मिनल	मिलन	38	12
इजजाम	इल्लाम	42	1
चारद	चादर	47	9
वहा	वह	48	1
खाखी	रवारवी	50	7
वसल	वस्ल	65	2
भीख	दान	80	14
चमश	चश्म	80	9
सुफला	सुफता	89	9
मौसमा	मौसमों	95	6
रंगी	रंगीन	104	2
फल	फूल	118	10
भला	भाला	127	8
जन्में	नज्में	128	6
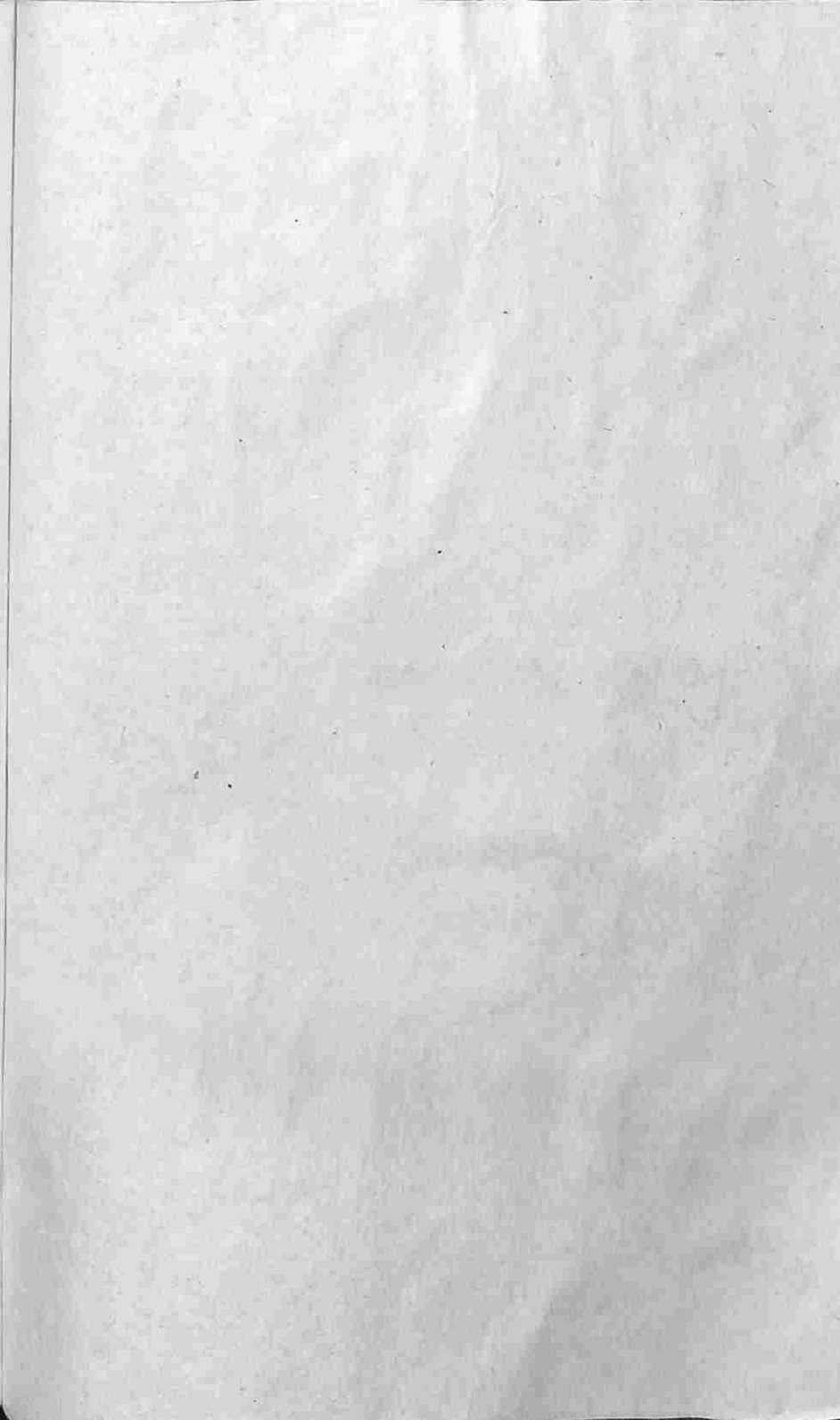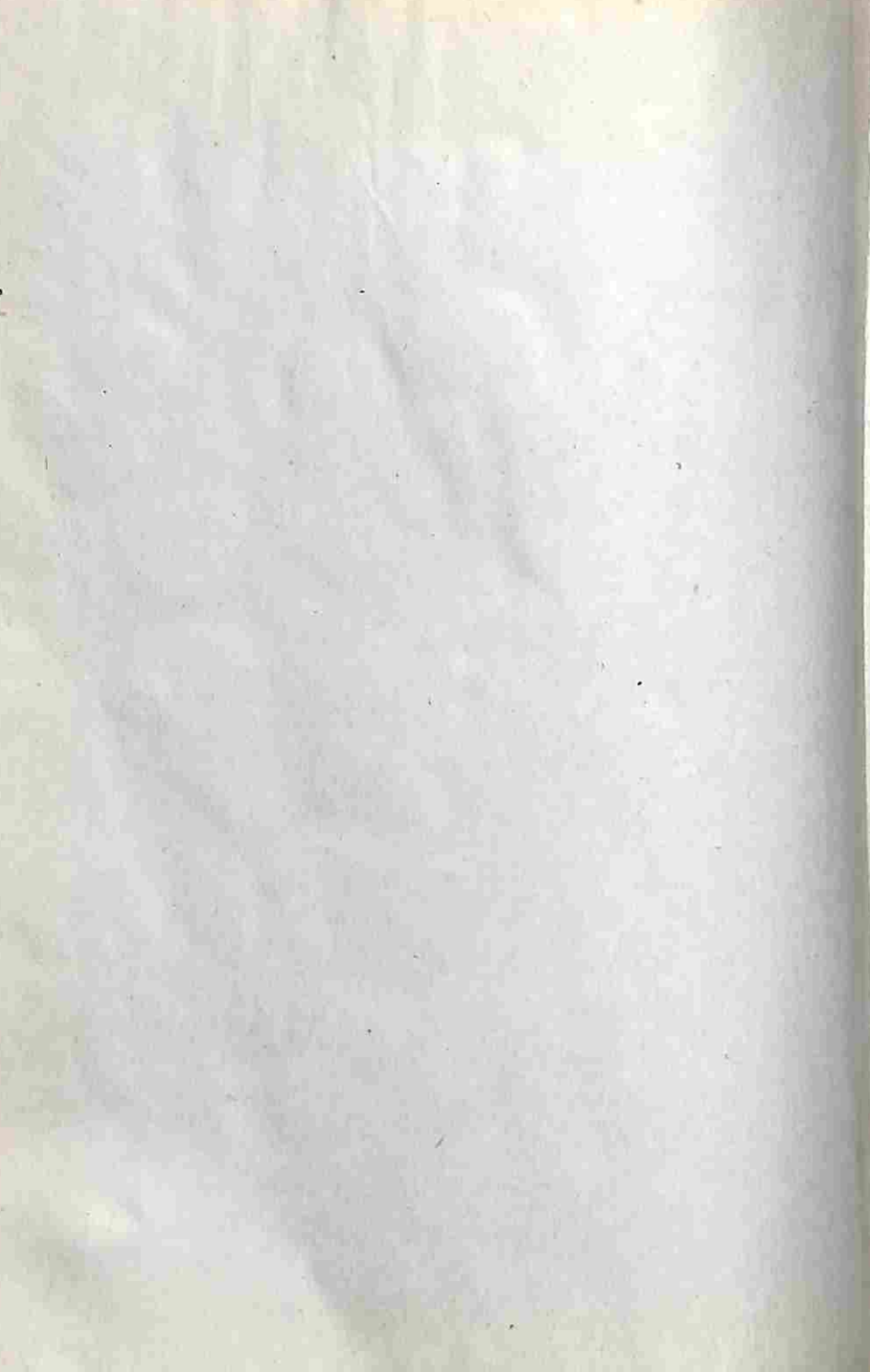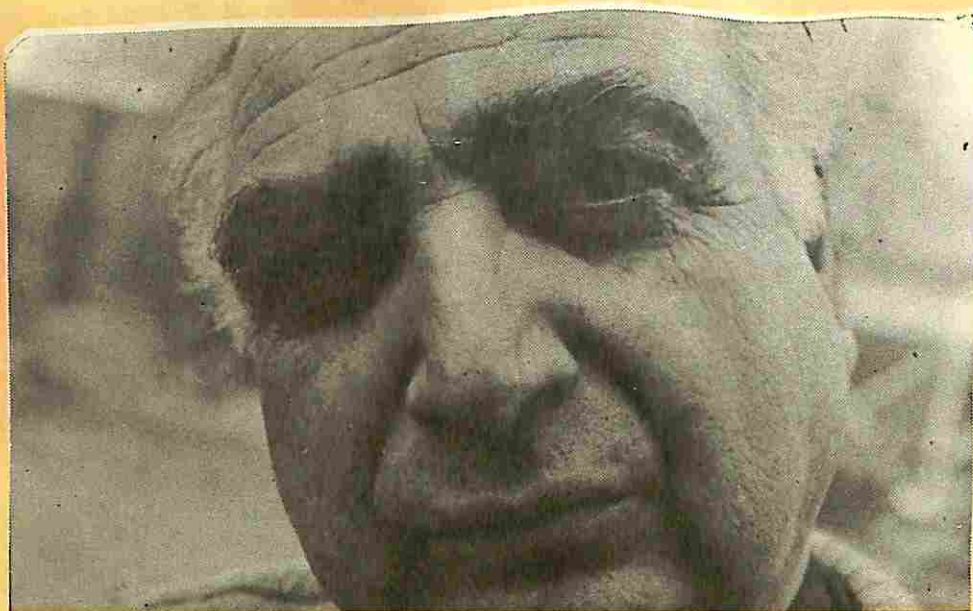
इस शायर की इन आंखों में, गयी रुतों की यादें हैं.
इस शायर के इन नग़्मों में, बिछड़े यारों की बातें हैं.
यह शायर हर इक लम्हे को, सपनों में बांध के जीता है.
यह सागर-मंथन करता है, चुप करके सब विष पीता है.

—सतीश विमल

ताबिश पब्लिकेशन्स, श्रीनगर

कश्मीर—190001